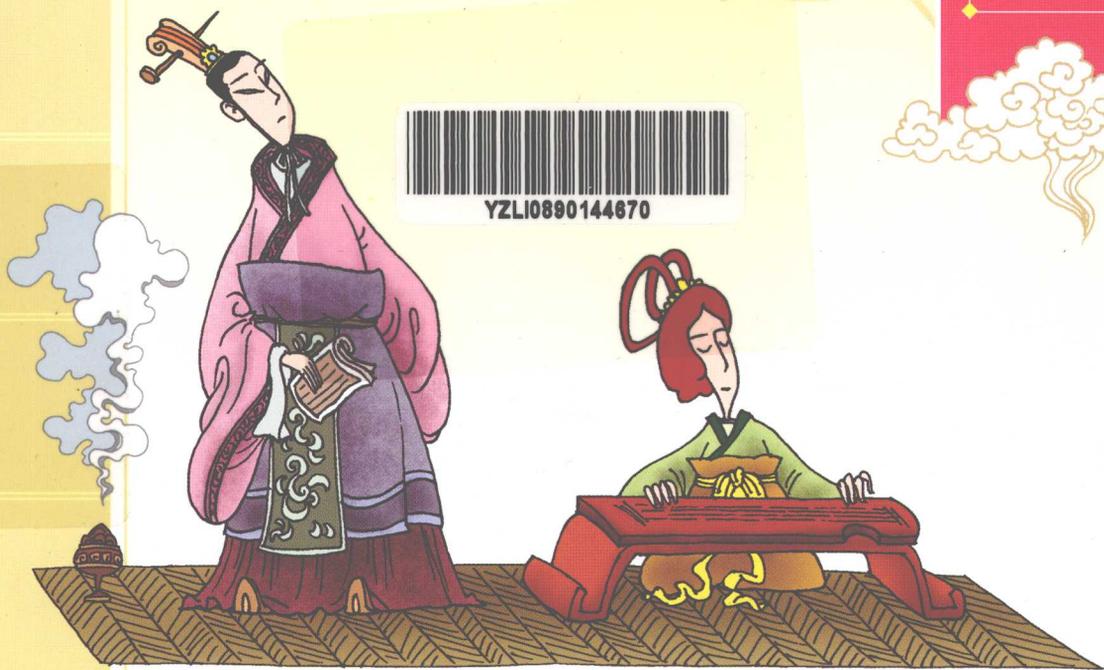


中华经典诗文歌吟

全国优秀校本课程资源
山东省首届社科普及优秀作品



YZL10890144670



山东人民出版社

中华经典诗文歌吟

全国优秀校本课程资源
山东省首届社科普及优秀作品

主编：王...
副主编：王...
（原书画家刘敏）：员

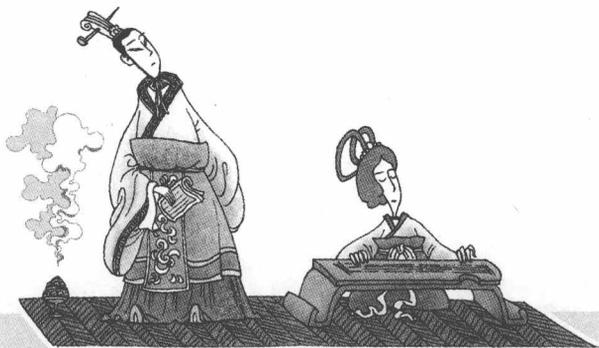
吕崇林 木崇欣 杰开王 殿令开 即气开
曹翠李 另王李 继 李 半如辛 即徽林
羊国洪 半 米 罕寿气 薛则羽 夷士羽
顾芸林 袁斯尧 宏王薛 去半回 林数甘
甄中雷 袁永福 翁文育 林琦聂 平小秦
另世德 饴 雷

翁文育：编
即徽林：编主行序
李：编主原
（原书画家刘敏）：员



YZLI0890144670

山东人民出版社



图书在版编目 (CIP) 数据

中华经典诗文歌吟 / 《中华经典诗文歌吟》编写组
编. — 济南: 山东人民出版社, 2011.6
ISBN 978-7-209-05610-6

I. ①中… II. ①中… III. ①古典诗歌—中国—中小
学—教学参考资料②文言文—中小学—教学参考资料
IV. ①G634.303

中国版本图书馆 CIP 数据核字 (2010) 第 256092 号

责任编辑: 田晓玉 等
封面设计: 石冰清

中华经典诗文歌吟

《中华经典诗文歌吟》编写组 编

山东出版集团

山东人民出版社出版发行

社 址: 济南市经九路胜利大街 39 号 邮 编: 250001

网 址: <http://www.sd-book.com.cn>

发行部: (0531) 82098025 82098029

新华书店经销

泰安福运达彩印包装有限公司印装

规 格 16 开 (184mm × 260mm)

印 张 10.25

字 数 60 千字

版 次 2011 年 6 月第 1 版

印 次 2011 年 6 月第 1 次

ISBN 978-7-209-05610-6

定 价 10.00 元

如有质量问题, 请与印刷厂调换。电话: (0538) 6315388

中

学

参

考

文

源

山东省
全国
教材
本

中华经典诗文歌吟编写委员会

主任：杜君河

副主任：张衍峰

委员：（按姓氏笔画排列）

马广明 孔令强 王开杰 刘崇才 孙维岳
孙瑞明 辛成华 李辉 李玉民 李翠霞
邱士庚 汪顺新 严铁军 张华 张国祥
杜建柱 何作法 范玉宏 武洪涛 郝建刚
秦小平 聂海林 宿文传 路元宏 雷印迎
雷鹏 颜世民

主编：宿文传

执行主编：孙瑞明 辛成华 秦小平

副主编：李波 刘雪峰

编写人员：（按姓氏笔画排列）

尹建民 尹雁凌 王亮 史红芳 李新华
李鹏 李金焕 李秀芝 伊新华 孙鹏
张继水 赵玲 崔晓彤 蒋伟



写在前面的话

中国是诗的王国，自古诗人之众，灿若繁星；佳作之多，浩如烟海。历经悠悠五千年历史的积淀，诗词歌赋以它的丰富璀璨，成为文化艺术殿堂的瑰宝，深广久远地影响了我们一代又一代的成长。诗歌最初是与舞蹈、音乐合为一体的。《诗大序》载：“在心为志，发言为诗，情动于中而行于言，言之不足，故嗟叹之，嗟叹之不足，故咏歌之，咏歌之不足，不知手之舞之，足之蹈之。”古籍所描绘的这些图景，也说明了舞蹈、音乐、诗歌最初合为一体的状况。诗歌是有韵的音乐，音乐是无韵的诗歌。诗歌失去音乐性，其富于音乐美的语言艺术特征也将随之丧失，正所谓“诗言志、律和声”，经典诗文借以音乐的帮助，广为流传。

在漫长的历史发展过程中，诗文吟唱作为文化传承的优良传统，成为中国古代儿童教育的重要内容之一。时代发展到今天，经典诗文吟唱在中小学教育中仍然有着积极的现实意义。开展此项活动，有利于学生体会经典诗文的意境美和音韵美，生动活泼地感受传统文化教育，提高人文素养；有利于促进学校教育和家庭教育的融合，全面加强思想道德建设，弘扬民族文化，培育民族精神。

基于以上认识，我们在浩如烟海的经典诗词中遴选百首，配以乐曲，编辑完成《中华经典诗文歌吟》。这些诗文涵盖九年义务教育课程标准推荐篇目。全书分十一个单元，每个单元由单元导读、经典吟唱、吟诵展示、活动乐园、诗词常识等板块组成。打开它，如同穿越历史的时空，陶醉于诗人笔下的明媚春光，温暖于故人的悠悠情思，感动于边塞羁旅的孤寂悲壮，在恬淡的田园风光中小憩，因古人的爱国悲悯而感怀，仰望星空，触摸伟人情怀……

《中华经典诗文歌吟》作为学校课程资源，需要家庭教育、学校教育和社会教育三个层面的合作开发与利用。让我们携手努力，共同传唱中华文化经典，感悟诗人情怀，培养少年君子。

愿这本闪烁着智慧火花、蕴涵着泥土芬芳的《中华经典诗文歌吟》，能给我们的老师、同学带来新鲜、活泼的气息，带来美的熏陶与享受。让我们乘着音乐的翅膀，在音符与汉字中畅游经典诗文国度，享受经典神韵之美，用歌唱将经典诗文深深印烙在我们心灵深处。

编者

目 录

| | | | | | |
|-----|--------------|-----|-----|---------|----|
| 171 | 《静夜思》 | 17 | 16 | 《望岳》 | 12 |
| 172 | 《春夜喜雨》 | 18 | 17 | 《望庐山瀑布》 | 13 |
| 173 | 《早春呈水部张十八员外》 | 19 | 18 | 《望天门山》 | 14 |
| 174 | 《江南春》 | 20 | 19 | 《望岳》 | 15 |
| 175 | 《惠崇春江晓景》 | 21 | 20 | | |
| 176 | 《春日》 | 22 | 21 | | |
| 177 | 《暮春》 | 23 | 22 | | |
| 178 | 《咏柳》 | 24 | 23 | | |
| 179 | 《春晓》 | 25 | 24 | | |
| 180 | 《绝句》 | 26 | 25 | | |
| 181 | 《绝句》 | 27 | 26 | | |
| 182 | 《春夜喜雨》 | 28 | 27 | | |
| 183 | 《早春呈水部张十八员外》 | 29 | 28 | | |
| 184 | 《江南春》 | 30 | 29 | | |
| 185 | 《惠崇春江晓景》 | 31 | 30 | | |
| 186 | 《春日》 | 32 | 31 | | |
| 187 | 《暮春》 | 33 | 32 | | |
| 188 | 《咏柳》 | 34 | 33 | | |
| 189 | 《春晓》 | 35 | 34 | | |
| 190 | 《绝句》 | 36 | 35 | | |
| 191 | 《绝句》 | 37 | 36 | | |
| 192 | 《春夜喜雨》 | 38 | 37 | | |
| 193 | 《早春呈水部张十八员外》 | 39 | 38 | | |
| 194 | 《江南春》 | 40 | 39 | | |
| 195 | 《惠崇春江晓景》 | 41 | 40 | | |
| 196 | 《春日》 | 42 | 41 | | |
| 197 | 《暮春》 | 43 | 42 | | |
| 198 | 《咏柳》 | 44 | 43 | | |
| 199 | 《春晓》 | 45 | 44 | | |
| 200 | 《绝句》 | 46 | 45 | | |
| 201 | 《绝句》 | 47 | 46 | | |
| 202 | 《春夜喜雨》 | 48 | 47 | | |
| 203 | 《早春呈水部张十八员外》 | 49 | 48 | | |
| 204 | 《江南春》 | 50 | 49 | | |
| 205 | 《惠崇春江晓景》 | 51 | 50 | | |
| 206 | 《春日》 | 52 | 51 | | |
| 207 | 《暮春》 | 53 | 52 | | |
| 208 | 《咏柳》 | 54 | 53 | | |
| 209 | 《春晓》 | 55 | 54 | | |
| 210 | 《绝句》 | 56 | 55 | | |
| 211 | 《绝句》 | 57 | 56 | | |
| 212 | 《春夜喜雨》 | 58 | 57 | | |
| 213 | 《早春呈水部张十八员外》 | 59 | 58 | | |
| 214 | 《江南春》 | 60 | 59 | | |
| 215 | 《惠崇春江晓景》 | 61 | 60 | | |
| 216 | 《春日》 | 62 | 61 | | |
| 217 | 《暮春》 | 63 | 62 | | |
| 218 | 《咏柳》 | 64 | 63 | | |
| 219 | 《春晓》 | 65 | 64 | | |
| 220 | 《绝句》 | 66 | 65 | | |
| 221 | 《绝句》 | 67 | 66 | | |
| 222 | 《春夜喜雨》 | 68 | 67 | | |
| 223 | 《早春呈水部张十八员外》 | 69 | 68 | | |
| 224 | 《江南春》 | 70 | 69 | | |
| 225 | 《惠崇春江晓景》 | 71 | 70 | | |
| 226 | 《春日》 | 72 | 71 | | |
| 227 | 《暮春》 | 73 | 72 | | |
| 228 | 《咏柳》 | 74 | 73 | | |
| 229 | 《春晓》 | 75 | 74 | | |
| 230 | 《绝句》 | 76 | 75 | | |
| 231 | 《绝句》 | 77 | 76 | | |
| 232 | 《春夜喜雨》 | 78 | 77 | | |
| 233 | 《早春呈水部张十八员外》 | 79 | 78 | | |
| 234 | 《江南春》 | 80 | 79 | | |
| 235 | 《惠崇春江晓景》 | 81 | 80 | | |
| 236 | 《春日》 | 82 | 81 | | |
| 237 | 《暮春》 | 83 | 82 | | |
| 238 | 《咏柳》 | 84 | 83 | | |
| 239 | 《春晓》 | 85 | 84 | | |
| 240 | 《绝句》 | 86 | 85 | | |
| 241 | 《绝句》 | 87 | 86 | | |
| 242 | 《春夜喜雨》 | 88 | 87 | | |
| 243 | 《早春呈水部张十八员外》 | 89 | 88 | | |
| 244 | 《江南春》 | 90 | 89 | | |
| 245 | 《惠崇春江晓景》 | 91 | 90 | | |
| 246 | 《春日》 | 92 | 91 | | |
| 247 | 《暮春》 | 93 | 92 | | |
| 248 | 《咏柳》 | 94 | 93 | | |
| 249 | 《春晓》 | 95 | 94 | | |
| 250 | 《绝句》 | 96 | 95 | | |
| 251 | 《绝句》 | 97 | 96 | | |
| 252 | 《春夜喜雨》 | 98 | 97 | | |
| 253 | 《早春呈水部张十八员外》 | 99 | 98 | | |
| 254 | 《江南春》 | 100 | 99 | | |
| 255 | 《惠崇春江晓景》 | 101 | 100 | | |
| 256 | 《春日》 | 102 | 101 | | |
| 257 | 《暮春》 | 103 | 102 | | |
| 258 | 《咏柳》 | 104 | 103 | | |
| 259 | 《春晓》 | 105 | 104 | | |
| 260 | 《绝句》 | 106 | 105 | | |
| 261 | 《绝句》 | 107 | 106 | | |
| 262 | 《春夜喜雨》 | 108 | 107 | | |
| 263 | 《早春呈水部张十八员外》 | 109 | 108 | | |
| 264 | 《江南春》 | 110 | 109 | | |
| 265 | 《惠崇春江晓景》 | 111 | 110 | | |
| 266 | 《春日》 | 112 | 111 | | |
| 267 | 《暮春》 | 113 | 112 | | |
| 268 | 《咏柳》 | 114 | 113 | | |
| 269 | 《春晓》 | 115 | 114 | | |
| 270 | 《绝句》 | 116 | 115 | | |
| 271 | 《绝句》 | 117 | 116 | | |
| 272 | 《春夜喜雨》 | 118 | 117 | | |
| 273 | 《早春呈水部张十八员外》 | 119 | 118 | | |
| 274 | 《江南春》 | 120 | 119 | | |
| 275 | 《惠崇春江晓景》 | 121 | 120 | | |
| 276 | 《春日》 | 122 | 121 | | |
| 277 | 《暮春》 | 123 | 122 | | |
| 278 | 《咏柳》 | 124 | 123 | | |
| 279 | 《春晓》 | 125 | 124 | | |
| 280 | 《绝句》 | 126 | 125 | | |
| 281 | 《绝句》 | 127 | 126 | | |
| 282 | 《春夜喜雨》 | 128 | 127 | | |
| 283 | 《早春呈水部张十八员外》 | 129 | 128 | | |
| 284 | 《江南春》 | 130 | 129 | | |
| 285 | 《惠崇春江晓景》 | 131 | 130 | | |
| 286 | 《春日》 | 132 | 131 | | |
| 287 | 《暮春》 | 133 | 132 | | |
| 288 | 《咏柳》 | 134 | 133 | | |
| 289 | 《春晓》 | 135 | 134 | | |
| 290 | 《绝句》 | 136 | 135 | | |
| 291 | 《绝句》 | 137 | 136 | | |
| 292 | 《春夜喜雨》 | 138 | 137 | | |
| 293 | 《早春呈水部张十八员外》 | 139 | 138 | | |
| 294 | 《江南春》 | 140 | 139 | | |
| 295 | 《惠崇春江晓景》 | 141 | 140 | | |
| 296 | 《春日》 | 142 | 141 | | |
| 297 | 《暮春》 | 143 | 142 | | |
| 298 | 《咏柳》 | 144 | 143 | | |
| 299 | 《春晓》 | 145 | 144 | | |
| 300 | 《绝句》 | 146 | 145 | | |
| 301 | 《绝句》 | 147 | 146 | | |
| 302 | 《春夜喜雨》 | 148 | 147 | | |
| 303 | 《早春呈水部张十八员外》 | 149 | 148 | | |
| 304 | 《江南春》 | 150 | 149 | | |
| 305 | 《惠崇春江晓景》 | 151 | 150 | | |
| 306 | 《春日》 | 152 | 151 | | |
| 307 | 《暮春》 | 153 | 152 | | |
| 308 | 《咏柳》 | 154 | 153 | | |
| 309 | 《春晓》 | 155 | 154 | | |
| 310 | 《绝句》 | 156 | 155 | | |
| 311 | 《绝句》 | 157 | 156 | | |
| 312 | 《春夜喜雨》 | 158 | 157 | | |
| 313 | 《早春呈水部张十八员外》 | 159 | 158 | | |
| 314 | 《江南春》 | 160 | 159 | | |
| 315 | 《惠崇春江晓景》 | 161 | 160 | | |
| 316 | 《春日》 | 162 | 161 | | |
| 317 | 《暮春》 | 163 | 162 | | |
| 318 | 《咏柳》 | 164 | 163 | | |
| 319 | 《春晓》 | 165 | 164 | | |
| 320 | 《绝句》 | 166 | 165 | | |
| 321 | 《绝句》 | 167 | 166 | | |
| 322 | 《春夜喜雨》 | 168 | 167 | | |
| 323 | 《早春呈水部张十八员外》 | 169 | 168 | | |
| 324 | 《江南春》 | 170 | 169 | | |
| 325 | 《惠崇春江晓景》 | 171 | 170 | | |
| 326 | 《春日》 | 172 | 171 | | |
| 327 | 《暮春》 | 173 | 172 | | |
| 328 | 《咏柳》 | 174 | 173 | | |
| 329 | 《春晓》 | 175 | 174 | | |
| 330 | 《绝句》 | 176 | 175 | | |
| 331 | 《绝句》 | 177 | 176 | | |
| 332 | 《春夜喜雨》 | 178 | 177 | | |
| 333 | 《早春呈水部张十八员外》 | 179 | 178 | | |
| 334 | 《江南春》 | 180 | 179 | | |
| 335 | 《惠崇春江晓景》 | 181 | 180 | | |
| 336 | 《春日》 | 182 | 181 | | |
| 337 | 《暮春》 | 183 | 182 | | |
| 338 | 《咏柳》 | 184 | 183 | | |
| 339 | 《春晓》 | 185 | 184 | | |
| 340 | 《绝句》 | 186 | 185 | | |
| 341 | 《绝句》 | 187 | 186 | | |
| 342 | 《春夜喜雨》 | 188 | 187 | | |
| 343 | 《早春呈水部张十八员外》 | 189 | 188 | | |
| 344 | 《江南春》 | 190 | 189 | | |
| 345 | 《惠崇春江晓景》 | 191 | 190 | | |
| 346 | 《春日》 | 192 | 191 | | |
| 347 | 《暮春》 | 193 | 192 | | |
| 348 | 《咏柳》 | 194 | 193 | | |
| 349 | 《春晓》 | 195 | 194 | | |
| 350 | 《绝句》 | 196 | 195 | | |
| 351 | 《绝句》 | 197 | 196 | | |
| 352 | 《春夜喜雨》 | 198 | 197 | | |
| 353 | 《早春呈水部张十八员外》 | 199 | 198 | | |
| 354 | 《江南春》 | 200 | 199 | | |
| 355 | 《惠崇春江晓景》 | 201 | 200 | | |
| 356 | 《春日》 | 202 | 201 | | |
| 357 | 《暮春》 | 203 | 202 | | |
| 358 | 《咏柳》 | 204 | 203 | | |
| 359 | 《春晓》 | 205 | 204 | | |
| 360 | 《绝句》 | 206 | 205 | | |
| 361 | 《绝句》 | 207 | 206 | | |
| 362 | 《春夜喜雨》 | 208 | 207 | | |
| 363 | 《早春呈水部张十八员外》 | 209 | 208 | | |
| 364 | 《江南春》 | 210 | 209 | | |
| 365 | 《惠崇春江晓景》 | 211 | 210 | | |
| 366 | 《春日》 | 212 | 211 | | |
| 367 | 《暮春》 | 213 | 212 | | |
| 368 | 《咏柳》 | 214 | 213 | | |
| 369 | 《春晓》 | 215 | 214 | | |
| 370 | 《绝句》 | 216 | 215 | | |
| 371 | 《绝句》 | 217 | 216 | | |
| 372 | 《春夜喜雨》 | 218 | 217 | | |
| 373 | 《早春呈水部张十八员外》 | 219 | 218 | | |
| 374 | 《江南春》 | 220 | 219 | | |
| 375 | 《惠崇春江晓景》 | 221 | 220 | | |
| 376 | 《春日》 | 222 | 221 | | |
| 377 | 《暮春》 | 223 | 222 | | |
| 378 | 《咏柳》 | 224 | 223 | | |
| 379 | 《春晓》 | 225 | 224 | | |
| 380 | 《绝句》 | 226 | 225 | | |
| 381 | 《绝句》 | 227 | 226 | | |
| 382 | 《春夜喜雨》 | 228 | 227 | | |
| 383 | 《早春呈水部张十八员外》 | 229 | 228 | | |
| 384 | 《江南春》 | 230 | 229 | | |
| 385 | 《惠崇春江晓景》 | 231 | 230 | | |
| 386 | 《春日》 | 232 | 231 | | |
| 387 | 《暮春》 | 233 | 232 | | |
| 388 | 《咏柳》 | 234 | 233 | | |
| 389 | 《春晓》 | 235 | 234 | | |
| 390 | 《绝句》 | 236 | 235 | | |
| 391 | 《绝句》 | 237 | 236 | | |
| 392 | 《春夜喜雨》 | 238 | 237 | | |
| 393 | 《早春呈水部张十八员外》 | 239 | 238 | | |
| 394 | 《江南春》 | 240 | 239 | | |
| 395 | 《惠崇春江晓景》 | 241 | 240 | | |
| 396 | 《春日》 | 242 | 241 | | |



| | | | |
|-------------------|------------|-------------------|------------|
| 29. 《长歌行》 | / 43 | 48. 《小儿垂钓》 | / 70 |
| 30. 《劝学》 | / 44 | 49. 《寻隐者不遇》 | / 71 |
| 31. 《教子诗》 | / 45 | 50. 《池上》 | / 72 |
| 32. 《昨日歌》 | / 46 | 51. 《少年行》 | / 73 |
| 33. 《今日歌》 | / 47 | 52. 《赤壁》 | / 74 |
| 34. 《明日歌》 | / 48 | 53. 《元日》 | / 75 |
| 35. 《金缕衣》 | / 49 | 54. 《游园不值》 | / 76 |
| ★吟诵展示 | / 50 | 55. 《所见》 | / 77 |
| ★活动乐园 | / 51 | ★吟诵展示 | / 78 |
| ★诗词常识 | / 52 | ★活动乐园 | / 79 |
| 第五单元 咏物言志篇 | | ★诗词常识 | / 80 |
| ★单元导读 | / 53 | 第七单元 悠悠情思篇 | |
| ★经典吟唱 | / 54 | ★单元导读 | / 81 |
| 36. 《观沧海》 | / 54 | ★经典吟唱 | / 82 |
| 37. 《咏鹅》 | / 55 | 56. 《九月九日忆山东兄弟》 | / 82 |
| 38. 《行路难》 | / 56 | 57. 《次北固山下》 | / 83 |
| 39. 《蜂》 | / 57 | 58. 《静夜思》 | / 84 |
| 40. 《浣溪沙》 | / 58 | 59. 《月夜忆舍弟》 | / 85 |
| 41. 《登飞来峰》 | / 59 | 60. 《游子吟》 | / 86 |
| 42. 《墨梅》 | / 60 | 61. 《枫桥夜泊》 | / 87 |
| 43. 《石灰吟》 | / 61 | 62. 《夜雨寄北》 | / 88 |
| 44. 《竹石》 | / 62 | 63. 《相见欢》 | / 89 |
| 45. 《己亥杂诗》(一) | / 63 | 64. 《水调歌头》 | / 90 |
| ★吟诵展示 | / 64 | ★吟诵展示 | / 92 |
| ★活动乐园 | / 65 | ★活动乐园 | / 93 |
| ★诗词常识 | / 66 | ★诗词常识 | / 94 |
| 第六单元 叙事抒情篇 | | 第八单元 送别酬答篇 | |
| ★单元导读 | / 67 | ★单元导读 | / 95 |
| ★经典吟唱 | / 68 | ★经典吟唱 | / 96 |
| 46. 《古朗月行》 | / 68 | 65. 《送元二使安西》 | / 96 |
| 47. 《早发白帝城》 | / 69 | | |



| | |
|--------------------|-------|
| 66. 《芙蓉楼送辛渐》 | / 97 |
| 67. 《黄鹤楼送孟浩然之广陵》 | / 98 |
| 68. 《赠汪伦》 | / 99 |
| 69. 《闻王昌龄左迁龙标遥有此寄》 | / 100 |
| 70. 《别董大》 | / 101 |
| 71. 《赋得古原草送别》 | / 102 |
| 72. 《酬乐天扬州初逢席上见赠》 | / 103 |
| 73. 《晓出净慈寺送林子方》 | / 104 |
| ★吟诵展示 | / 105 |
| ★活动乐园 | / 106 |
| ★诗词常识 | / 107 |

第九单元 边塞羁旅篇

| | |
|--------------|-------|
| ★单元导读 | / 108 |
| ★经典吟唱 | / 109 |
| 74. 《凉州词》 | / 109 |
| 75. 《使至塞上》 | / 110 |
| 76. 《凉州词》 | / 111 |
| 77. 《塞下曲》 | / 112 |
| 78. 《雁门太守行》 | / 113 |
| 79. 《渔家傲》 | / 114 |
| 80. 《天净沙·秋思》 | / 115 |
| 81. 《出塞》 | / 116 |
| ★吟诵展示 | / 117 |
| ★活动乐园 | / 118 |
| ★诗词常识 | / 119 |

第十单元 爱国悲悯篇

| | |
|-------|-------|
| ★单元导读 | / 120 |
|-------|-------|

| | |
|----------------|-------|
| ★经典吟唱 | / 121 |
| 82. 《春望》 | / 121 |
| 83. 《悯农》 | / 122 |
| 84. 《泊秦淮》 | / 123 |
| 85. 《夏日绝句》 | / 124 |
| 86. 《江城子·密州出猎》 | / 125 |
| 87. 《示儿》 | / 127 |
| 88. 《题临安邸》 | / 128 |
| 89. 《过零丁洋》 | / 129 |
| 90. 《山坡羊·潼关怀古》 | / 130 |
| 91. 《己亥杂诗》(二) | / 131 |
| 92. 《赠梁任父同年》 | / 132 |
| ★吟诵展示 | / 133 |
| ★活动乐园 | / 134 |
| ★诗词常识 | / 135 |

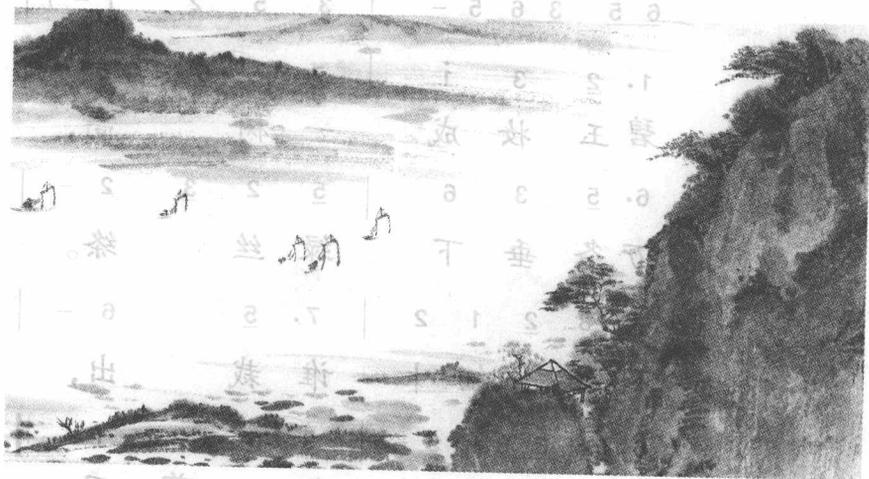
第十一单元 仰望星空篇

| | |
|--------------------|-------|
| ★单元导读 | / 136 |
| ★经典吟唱 | / 137 |
| 93. 《沁园春·长沙》 | / 137 |
| 94. 《七律·长征》 | / 138 |
| 95. 《沁园春·雪》 | / 139 |
| 96. 《水调歌头·重上井冈山》 | / 141 |
| 97. 《次睢如夫子<伤时事>原韵》 | / 145 |
| 98. 《大江歌罢掉头东》 | / 146 |
| 99. 《梅岭三章》 | / 148 |
| 100. 《仰望星空》 | / 150 |
| ★吟诵展示 | / 152 |
| ★活动乐园 | / 153 |
| ★诗词常识 | / 154 |

第一单元

第一单元

明媚春光篇



中华经典新文选

单元导读

和风送暖，鸟语花香，春意盎然。春天是一幅幅美丽的画卷，春天是一首首动人的诗篇，春天是一曲曲抒情的乐章。古今中外，多少文人墨客，用诗，用词，用曲……描绘春天的景物，抒发春天的情怀。本组诗文将带领我们走进春天，聆听春的消息，在春姑娘的诗意心灵里徜徉！

吟唱本组诗文，要注意观察诗人是怎样细心寻找春天的，体会诗人是如何细致描绘春天景物的，有哪些独特的感受；还要体会诗人是怎样展开联想和想象，来表达这些独特感受的。此外，如果注意比较，你还会发现，同样都是写春，不同地方、不同时间的春各具特色。

1. 咏柳

1=E $\frac{4}{4}$

作词：贺知章
作曲：李波

| | | | |
|---------------------------|--|---------------------------|----------------|
| (<u>3</u> 3 <u>2</u> 1 2 | | 7. <u>5</u> 6 | 春 裁 出 |
| <u>6</u> 5 <u>3</u> 6 5 - | | <u>3</u> 5 <u>2</u> 1 -) | |
| 1. <u>2</u> 3 i | | <u>7</u> 5 <u>6</u> 5 - | 碧 玉 妆 成 一 树 高， |
| 6. <u>5</u> 3 6 | | <u>5</u> 2 <u>3</u> 2 - | 万 条 垂 下 绿 丝 绦。 |
| <u>3</u> 3 <u>2</u> 1 2 | | 7. <u>5</u> 6 - | 不 知 细 叶 谁 裁 出， |
| <u>6</u> 5 <u>3</u> 6 5 - | | <u>3</u> 5 <u>2</u> 1 - | 二 月 春 风 似 剪 刀。 |

诗人简介

贺知章(659~744)，唐代诗人，字季真，号四明狂客。诗文以绝句见长，除祭神乐章、应制诗外，其写景、抒怀之作风格独特，清新潇洒，著名的《咏柳》《回乡偶书》脍炙人口，千古传诵。

解 析

全诗大意为：柳树像碧玉装扮成的美女一样，千万枝柳条像她那绿色的丝带。知道这细嫩的柳叶是谁剪裁的吗？就是那像剪刀的二月春风啊！

在诗人的眼中，垂柳似美女的化身：高高的树干，就像她亭亭玉立的风姿，下垂的柳条，就像她裙摆上的丝带。诗人把乍暖还寒的二月春风比作剪刀，由无形化为有形，显示了春风的神奇灵巧，表达了诗人对春天的无限热爱。



2. 春晓

1=F $\frac{2}{4}$ 林: 周村
曲: 曲村

作词: 孟浩然
作曲: 李波

(2·3 | 5 - | 3 3 2 1 | 2 2 2 1 6 | 1 -) |

5 5 | 6 5 6 | 5 5 | 6 3 2 | 3 - |

春眠不觉晓，处处闻啼鸟。

2·3 | 5 | 3 3 2 1 | 2 2 2 1 6 | 5 - |

夜来风雨声，花落知多少。

2·3 | 5 | 3 3 2 1 | 2 2 2 1 6 | 1 - ||

夜来风雨声，花落知多少。

诗人简介

孟浩然（689～740），唐代田园诗人，风格清淡、质朴。他的诗篇以五言诗居多，主要是写他的田园生活以及游山玩水时的所见所闻和感受，在景物描写中寄托了丰富情感。

解析

全诗大意为：春天的晚上睡觉真香，不知不觉天就亮了。早晨醒来听到到处都是悦耳动听的鸟叫声。想起昨天夜里又刮风又下雨，不知道有多少花朵被打落了。

这首小诗饱含着诗人对大自然、对春光的热爱之心和喜悦之情。诗人抓住了清晨睡起时的瞬间感觉，宛如从心底流出的涓涓细流，为我们展现出一幅晨光明媚、万物更生的春天画卷。“啼鸟”声使读者仿佛置身于那鸟语花香的盎然春色里，而“风雨声”引起满地的落红，又引发我们多少的感叹。





3. 绝句

1=C $\frac{3}{4}$

作词：杜甫
作曲：尹雁凌

(3 1 5 5 6 | 1 7 6 6 - 2 | 3 5)
 3 5 3 2 3 | 5 2 1 - 2 | 3 2
 3 5 6 伏 | 5 1 3 不 春
 迟 日 江 山 丽 ,
 6 1 3 | 5 1 2 - 来 好
 春 风 花 草 香 。
 3 5 6 | 1 7 6 - 2 | 3 5
 泥 融 飞 燕 子 ,
 5 3 2 3 | 5 2 1 - ||
 沙 暖 睡 鸳 鸯 。

俞人奇

诗人简介

杜甫(712~770),字子美,唐代著名诗人,其诗显示了唐代由盛转衰的历史过程。以古体、律诗见长,风格多样,而以沉郁为主。有《杜工部集》。

解 析

全诗大意为:春天的阳光和煦温暖,大自然一片生机勃勃的美丽景象,春风吹来,带着花草的清香。河滩上冰雪融化,泥土变得潮湿而松软,引得燕子飞来含泥筑巢,温暖的沙子上还偎依着一双双鸳鸯。

诗中描绘了生机勃勃、具有美感的初春景物图,反映了诗人暂时定居草堂的安适心情,表露了诗人对初春时节自然界一派生机、欣欣向荣的欢悦情怀。



4. 绝句

1=C $\frac{2}{4}$

作词：杜甫
作曲：李波

作词：杜甫
作曲：李波

(3̣. 5̣ 6̣ 5̣ | 3̣ 2̣ 3̣ | 6̣. 1̣ 2̣ 3̣ | 2̣ - |

6̣. 1̣ 2̣ 3̣ | 6̣. 1̣ - | 6̣ 0̣ 5̣ 0̣ | 6̣ 0̣ 2̣ 0̣) |

6̣. 5̣ 3̣ 5̣ | i̇ 6̣ 5̣ | 6̣. i̇ 6̣ 5̣ | 6̣ - |

两个黄鹂 鸣翠柳，

3̣. 2̣ 3̣ 5̣ | i̇ 6̣ 5̣ | 1̣. 2̣ 5̣ 3̣ | 2̣ - |

一行白鹭 上青天。

3̣. 5̣ 6̣ 5̣ | 3̣ 2̣ 3̣ | 6̣. 1̣ 2̣ 3̣ | 2̣ - |

窗含西岭千秋雪， 千秋雪，

3̣. 5̣ 6̣ i̇ | 2̇ 3̇ i̇ | 2̇ - | 7̇ 7̇ 5̇ |

门泊东吴万里 船， 万里

6̣ - | 5̣ - | 6̣ - | 6̣ - ||

船。 啊…… 啊……

解析

全诗大意为：两个黄鹂在空中鸣叫，一行白鹭在天空中飞翔。透过窗口可以看见西岭千年不化的积雪，门口停泊着从万里东吴开来的船只。

这首诗描绘出四个独立的景色，营造出一幅生机勃勃的图画。诗人陶醉其中，望着来自东吴的船只，不觉勾起了乡愁，细致的内心活动自然地流露出来。



5. 春夜喜雨

1=C $\frac{4}{4}$

作词：杜甫

作曲：李波

($\dot{3}$ $\dot{6}$ $\underline{\dot{3} \cdot \dot{2}}$ $\underline{\dot{2}}$ | $\dot{6}$ $\dot{5}$ $\underline{\dot{6} \dot{1}}$ $\underline{\dot{1} 0}$) |

(0 $\dot{5}$ $\underline{\dot{6}}$ $\underline{\dot{1} \dot{3}}$ 0 $\underline{\dot{2}}$ - | $\underline{\dot{2} \cdot \dot{1}}$ $\underline{\dot{6} \dot{5}}$ $\underline{\dot{5}}$ -) |

好雨 知时 节， 当春 乃发生。

$\dot{6}$ $\dot{1}$ $\underline{1 2}$ 3 | $\underline{5 \cdot 3}$ $\underline{2 1}$ 2 - |

随风 潜入 夜， 润物 细无 声。

3 3 3 5 $\underline{6 \cdot \dot{1}}$ | $\underline{\dot{2} \dot{2}}$ $\underline{\dot{2} \dot{3}}$ $\underline{\dot{2}}$ - |

野径 云俱 黑， 江船 火独 明。

$\dot{3}$ $\dot{6}$ $\dot{3}$ $\underline{\dot{2}}$ | $\underline{\dot{2}}$ - - - |

晓看 红 湿 处，

$\underline{\dot{6} \dot{5}}$ $\underline{\dot{6} \dot{1}}$ $\underline{\dot{1} 0}$ ||

花重 锦官 城。

解析

全诗大意为：及时的春雨，好像懂得季节时令，它来的时候催动花草树木萌发滋生。细雨随着那微风悄悄地在夜间洒落，无声无息滋润万物。田野间的小路被乌云笼罩，一片漆黑，只有江面船上的灯火一片明亮。清晨将会看到枝头上鲜红湿润，成都街头经雨的花朵色彩将更艳更浓。

这首诗是历来被人们推崇的赞美春雨的佳作。诗人细致入微地描绘了春夜雨景，表达了自己的欣喜之情。全诗着重写一个“喜”字，每一句的字里行间，都透露出喜悦之情，这种喜悦之情的表露也是有层次的：从叙述到具体描写，从听觉到视觉，从当夜到明晨，结尾二句，诗人喜悦心情达到了高潮。



好 球 : 词 抄
歌 : 李 : 曲 抄

8 C=1

6. 早春呈水部张十八员外

1=C $\frac{2}{4}$

作词: 韩愈
作曲: 汪红专

(3 3 2 | 5 2 3 | 5 232 | 1 -) |

6 1 | 3 2 3 | 5 3 5 | 6 - 3 |

天 街 小 雨 润 如 酥, 里 干

3 5 | 6 5 3 | 2 3 1 | 2 - |

草 色 遥 看 近 却 无。

5 6 i | 2 i 6 | 5 6 i 6 5 | 3 - |

最 是 一 年 春 好 处, 陝 南

3 3 2 | 5 2 3 | 5 232 | 1 - ||

绝 胜 烟 柳 满 皇 都。

诗人简介

韩愈(768~824),字退之,河阳(今河南省焦作孟州市)人,汉族,世称韩昌黎,唐代文学家、哲学家,唐代古文运动的倡导者。

解 析

全诗大意为:皇城下着小雨把大地湿润得松软,小草钻出地面,远看一片浅绿近看却无。一年之中最美的就是这早春的景色,它远远胜过了满城烟柳的晚春景色。

这首诗前两行为写景,一行写小雨,一行写草色。作者经过细致观察、比较,非常生动地写出了京城早春景色的特点。后两行抒情,作者认为早春景色大大超过晚春的景色,表达了作者的赞美之情。



7. 江南春

1=C $\frac{3}{4}$

作词：杜牧

作曲：李波

代 员 八 十 派 滢 水 呈 春 早

(3 3 5 | 1 - 2 | 3 - 5 | 6 - - |
2 - i | 6 - 3 | 2 5 6 | i - -) |
3 3 5 | 6 - i | 7 - 6 5 | 6 - - |
千 里 莺 啼 绿 映 红，
i - 6 5 | 5 - i | 3 - 2 1 | 2 - - |
水 村 山 郭 酒 旗 风。
3 3 5 | 1 - 2 | 3 - 5 | 6 - - |
南 朝 四 百 八 十 寺，
2 - i | 6 - 3 | 2 5 6 | i - - ||
多 少 楼 台 烟 雨 中。

诗人简介

杜牧(803~852)，字牧之，号樊川居士，京兆万年(今陕西西安)人，唐代诗人。与李商隐并称“小李杜”。著有《樊川文集》。

解析

全诗大意为：千里江南，到处莺歌燕舞；桃红柳绿，一派春意盎然的景象。在临水的村庄，依山的城郭，到处都有迎风招展的酒旗。到处是香烟缭绕的寺庙，亭台楼阁矗立在朦胧的烟雨之中。

这首诗既有诗人亲眼所见的江南景色，也有他丰富的想象，写景、议论、抒情融为一体，虚实相间、动静相映，表现了诗人对江南景物的赞美与神往，也暗含了作者吊古伤今的兴亡之感。

8. 惠崇春江晓景

作词：苏轼
作曲：李波

1=C $\frac{4}{4}$

(3 3 2 | 1 2 3 2 | 3 5 | | 1̇. 2̇ | 5 | 6 | - | |

2̇. 3̇ | 2̇ 1̇ | 7 6 5 | | 6 1̇ | 2̇ 1̇ 2̇ 3̇ | 1̇ - | |

6 6 | 5 3 | 5 6 5 | 6 | 1̇ | | 2̇. 3̇ | 5 | 6 | - | |

竹外桃花呀 三两枝，

1̇. 2̇ | 1̇ 6 | 5 6 5 | 3 | | 2 3 | 3 2 1 | 2 - | |

春江水暖鸭先知，鸭先知。

3 3 2 | 1 2 3 2 | 3 5 | | 1̇. 2̇ | 5 | 6 | - | |

蒌蒿满地 芦芽短，

2̇. 3̇ | 2̇ 1̇ | 7 6 5 | | 6 1̇ | 2̇ 1̇ 2̇ 3̇ | 1̇ - ||

正是河豚欲上时，河豚欲上时。

诗人简介

苏轼(1037~1101)，字子瞻，又字和仲，号东坡居士，谥号文忠。北宋中期的文坛领袖，文学巨匠，唐宋八大家之一，其诗题材广阔，清新豪健，善用夸张比喻，独具风格。词开豪放一派，与辛弃疾并称“苏辛”。

解析

全诗大意为：初春大地复苏，竹林已被新叶染成一片嫩绿，桃树上也已绽开了三两枝早开的桃花。江水变暖了，鸭子早已按捺不住，抢着下水嬉戏了。满地的蒌蒿长出新枝了，芦芽儿吐尖了，这正是河豚将要浮上水面的时候。

这是一首题画诗，我们谁也没有见过惠崇的这幅画，但读过此诗，一派春意盎然的自然景象便浮现在眼前。诗人凭借丰富的想象，从鸭群戏水感知“春江水暖”，再联想到“欲上”的河豚，把人们从画境带入充满生机的自然界，生动传神地表达出对大自然风光的热爱。